स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

(हिंदी साप्ताहिक)

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 49 पृष्ठ 23 वर्ष 24

रविवार, इलाहाबाद, 4 मई 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

हर रचना में ,
भाव-भाव है ।
हर रचना की ,
अपनी कहानी ।
देखो तो इतिहास जरा तुम ,
हर रचना की अपनी निशानी।

बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । सरल सहज भाव से लबरेज महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में छपी कविताओं की। रूप, रंग, सज्जा, विचार सब मिलेगा इन कविताओं में । पढ़कर समझ कर तो देखिए। आइए बताते हैं विशेषांक में छपी रंचनाओं की बानगी से

पहली बानगी

मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना ।
ड्रैगन वाला झूला आया,पापा हमें झुला दो ना ।।

दूसरी बानगी

मेरे मन के मीत सीमा के रखवाले।
फागुन में पाती लिखूं कुशल से है घर वाले।

तीसरी बानगी

इन्हें पाँव की धूल न समझें ,ये माथे का चंदन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं।।

क्रमिकता के साथ हर माह अपनी रचनाओं की बानगी पेश करने वाली सभी रचनाकारों की कलम को सलाम है । ऐसे ही हर रचनाकार रचना के स्तर पर नया-नया संयोजन करती रहें और मन दर्पण का पुष्प खिलाती रहें यही शुभकामना है । विशेषांक कैसा लगा, प्रतिक्रिया अवश्य दें । अंत मे -

लिख डालो इतिहास भूगोल सब ,
जीवन केवल फानी है ।
जो लिखोगे वही बचेगा ,
जीवन है जिंदगानी है ।

उमेश श्रीवास्तव

कविताएं

प्रयागराज इकाई

गजल

चलो मिलकर सभी खेले करे हुड़दंग फागुन में
यही त्योहार होली का उड़े जब रंग फागुन में

जमीं से आसमाँ तक यूँ हुआ रंगीन है मौसम
मिटी नफ़रत मुहब्बत से बजे मिरदंग फागुन में

किसी का लाल चेहरा है कहीं नीला कहीं पीला
कहीं भीगे हुए रंगीन सारे अंग फागुन में

खिले है फूल टेसू के कहीं सरसों दिखे पीली
महकती बौर डाली झूमती है संग फागुन में

लगे मौसम सुहाना है खिले जब धूप धरती पर
ये कोयल कूकती 'रचना' बिखेरे रंग फागुन में

रचना सक्सेना

होली

रंग अबीर गुलाल ले, मन मे भरे उमंग
आयी होली झूम के, मिल कर खेले संग।

होली के त्योहार मे, मनहर रंग गुलाल
हाथ मे ले पिचकारी, मिला रहे है ताल।

धरती अंबर पर छा रहे , रंग उड़ा कुछ खास
मैं मतवाली हो गई , जाग रहे अहसास।

रंगो के त्योहार में , फुलवा रहे पुकार
रंगो ने जादू डाला ,भौरा करे गुँजार।

बच्चे बूढ़ों में भरा ,देखो जोश अपार
रंग खेलने में लगे ,इनको सब संसार।

डॉ पूर्णिमा पाण्डेय 'पूर्णा'
प्रयागराज

प्रेरणा

हे बालक अपनी परेशानियों
से ना घबराना
स्थिर मन से अच्छे प्राणियों से
प्रेरित हो जाना
एक सफल व्यक्तित्व बन जाना

एक सफल व्यक्ति कहलाना
कङ्गिन लगे डगर तो भी ना
घबराना
मेहनत करने से ना करना कोई
भी बहाना
जीवन की परीक्षाओं में सफल
हो जाना
संसार से जाने के बाद भी अपनी
अच्छी यादों से याद आना
एक अच्छा मनुष्य कहलाना
एक अच्छा समाज बसा जाना

मोहिनी कुमारी

होली

मन में उमंग दिखा पिया प्रेम पत्र लिखा
चले आओ अभी अभी आई होली आई है।।

लाल नीले पीले हरे रंग लाना खरे खरे
देखो भूल नहीं जाना रूत कैसी छाई है।।

भला कैसे खेलूं होली बिन तेरे हम जोली
सखियाँ सताएं मुझे करती लड़ाई है।।

होली बड़ी प्यारी लागे मन भागे आगे आगे
रंगों की फुहार ने तो आग ये लगाई है।।

प्रियंका त्रिपाङ्गी पांडेय

चहुं दिस उड़े रे गुलाल

चहुं दिस उड़े रे गुलाल
अररर होली में
रंग गए सब नर नार
अररर होली में
कोरे कोरे कलशो में पानी भरा है
लाल पीला हरा रंग घुला है
गोपियां करे खिलवाड़ अररर होली में
चहुं।।।।।
सारे ब्रिज में धूम मची है
मटकों में ङ्गंडाई घुली है
फागुनी बहे बयार
अररर होली में
चाहूं।।।।।।।
नंद गांव के होलियारे आए
बरसाने वाली ने लठ्ठ बरसाए
मच गई धूम अपार
अररर होली में
चहुं।।।।

जया मोहन
प्रयागराज

फाल्गुनी बयार

गेहूं की बाली गदराई पीली
सरसों की डाली झुकी आई
कोयल ने है मारी तान
अमवा के पेड़ में छाई अमराई
महुआ ने भी रस टपकाई
फागुन की अब आई बयार

झूम के धरती ने ली अंगड़ाई
पेड़ों की कलियां भी मुस्काई
करना नहीं अब शिकवा शिकायत
हाथ में रंग गुलाल को लेकर
नई उमंग उत्साह को भरकर
फागुन की अब चली बाहर

पिया मिलन की चाहत सजी है
शीत की विदाई हो चली है
प्यारी कोयल कुक रही है
ढोल मंजीरा सॉन्ग फगुआ होते हैं
मंदिर में जय घोष मचत है
बह रही है भक्ति की धार
फागुन की अब चली बयार

बरसाना की शान है होली
राधा कृष्ण की पहचान है होली
टोली की झिङ्गोली है होली
गुजिया भांग का साथ है होली
रंगों का त्यौहार है होली
यह है प्रेम का त्योहार
चली गई फागुन की बहार

ऋजु पाण्डेय
गोविन्दपुरी

होली कन्हैया सन्ग

चलो गुइयां आज
खेले होली कन्हैया सन्ग
अपने - अपने घर से निकली
कोई सांवरी कोई गोरी।
एक से एक नयन मतवारे
सबही उमिर की छोरी।
कोइ गावत कोई मृदंग बजावत
कोई नाचतदे तारी

भंग चढ़ायें ग्वाल बाल संग
नाचे राधा गोरी ।
पिचकारी की धार चले जब
नींली पीली धानी
धरती भीजै अंबर भीजै
भीजै दुनिया सारी।

प्रेमा राय

होला

लगा लो रंग फिर होली ना वापस जल्द आएगी
मारे पिचकारी श्याम राधा चुनरिया भीग जाएगी,
लगा लो रंग फिर होली- ना वापस जल्द आएगी।

होली आयी चुनरिया रंगी हरी,पीली,नीली गुलाबी,
बसंती मन बना मंदिर--वसुधा नवरंग बरषाएगी।

दुल्हन सी सजी है अवनी--प्रीतम सज गए अंबर,
बसंती फाग तुम गाओ कि--- बहारे मुस्कुराएगी।

बजाकर ढोल मंजीरे सब-- होली खेल रहे ब्रज में,
वृंदावन बरसाने की होली--सबका मन लुभाएगी।

दहन कर दो होलिका में- द्वेष बुराई कुरितियों को,
प्रेम से गिले शिकवे दूर अब के होली मन भाएंगी।

बने सौहार्द भाईचारा रहे-- ना दिल में कोई अंतर,
मिटाकर भेद मन से-----खुशियां झिलमिलाएगी।

खुशियां रंग बिखेर चली चढ़ गये भांग हुए मदमस्त,
करे हुड़दंग होली में टोली---रंगीली खूब हंसाएगी।

करें मिलकर झिंझौली सब बने पकवान गुझिया घर,
गले मिलजुल लगाए धरा समता रंग में डूब जाएगी।

उल्फत का ये पक्का रंग,-------
उतरे ना मेरे प्रीतम,
लगा लो रंग मंजू
फिर होली ना वापस जल्द आएगी।।

मंजू लता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

जब कहीं बारात आई,

जब कहीं बारात आई,
जब बजी द्वारे शहनाई।
एक जुट होकर मोहल्ला,
करते हैं सम्मान सबका।

हम बुजुर्गों की जो मानें,
हैं अतिथि भगवान जानें।
काका कहते सुन वो बेटा,
सबका अपना काम होता।
कुल्हड़ गढ़ कुम्हार दे जाये,
पानी भर कहरा पिलायें।
पत्तों की पत्तल गजब की,
माली साजे घर आंगन की।
काकी सुन्दर होंङ्ग खोले,
गाली खा समधी न बोले।
खुशियों की फुलझडियां छूटीं,
मन से मन को रंग दिया है।
फिर न पूछोगे मनोहर,
गांव ने क्या- क्या जिया है।
तेरा मेरा जब नहीं था,
अपना होकर सग नहीं था।।
खून के रिश्तों से बढ़ कर,
होता है सहयोग सच्चा।
जीवन के मुश्किल क्षणों में,
टूटता ना धागा कच्चा।
ऐसा अपना पन यहां है,
गांव का ये वो जहां है।
पैसों से बढ़कर वचन है,
मानवता अन्दर दफ़न है।
हैं पड़ोसी यार ऐसे,
दुःख में भी संग-संग जिया है।
फिर न पूछोगे महोदय,
गांव ने क्या-क्या किया है।

ममता पटेल

बिजनौर इकाई

बंदरबांट

आलू की बनी थी चटपटी चाट
हो गया देखो कैसा बंदरबांट

थोड़ी मुझको भी दे दो ना बहना
मानो तुम मेरा भी थोड़ा कहना

बहना ने दिखाई तनिक चतुराई
थोड़ी -थोड़ी कर सारी ही खाई

शीना रोई गायी और झल्लायी
मीना ने भर पेट खा ली अंगड़ाई

शीना को जरा भी हाथ न आई

भर मुंह में पानी वो पछताई

अर्चना चौहान
किरतपुर

बिजनौर इकाई

अभी सुबह के पाँच बजे हैं

अभी सुबह के पाँच बजे हैं ।
कितने सुंदर दृश्य सजे हैं ।
सब सपनों में भटक रहे हैं।

चंदा को जाने की जल्दी,
सूरज को आने की जल्दी,
तारों के मुँह लटक रहे हैं।

सुंदर कलियाँ चटक रही हैं ,
नन्हीं गुड़ियाँ मटक रही हैं ,
फूल डाल पर महक रहे हैं।

भँवरे गुन-गुन गुन-गुन करते,
सबके कानों में रस भरते,
पंछी पेड़ों पर चहक रहे हैं।

बकरी पत्ते चबा रही है,
काली गइया रँभा रही है,
जल में मेंढक फुदक रहे हैं।

मैं भी जल्दी से उड़ जाऊँ,
खेलूँ कूदूँ फिर पढ़ने जाऊँ ,
पापा मुझको डपट रहे हैं।

ऋतुबाला रस्तोगी
चाँदपुर ,बिजनौर

बालगीत

मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना ।
ड्रैगन वाला झूला आया,पापा हमें झुला दो ना ।।

बर्फ के गोले ठेले पर,और आइस्क्रीम भी बिकती है।
चाउमीन,कुलचे,हलवा परांठा,तवे पे टिक्की सिकती है।
मेले में हैं गर्म जलेबी, पापा हमें खिला दो ना।
मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना।।

खेल खिलौने प्यारे प्यारे,जगमग है दुकान सजी।
ऊंचे ऊंचे हिंडोले हैं,डायनासोर की धूम मची ।
टिकट की लम्बी लाइन पापा,रोबोट से मिलवा दो ना।
मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना।

मोटरसाइकिल कुआं मौत का, काला जादू आया है।
तोते,बन्दर, शेर और हाथी सर्कस बड़ा लगाया है।
ग़ज़ब तमाशा करता जोकर, सर्कस हमें दिखा दो ना।
मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना।

सोनू मोनू घूम के आए,फिरकी,खेल खिलौने लाए।
कितने प्यारे मोटू पतलू , सुन्दर मोटर गाड़ी लाए।
मुन्ने को बन्दूक दिला दो, गुड़िया मुझे दिला दो।।
मुन्ना मुन्नी शोर मचाएं,मेला हमें घुमा दो ना।

प्रो० पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर

गोरखपुर इकाई

एक सैनिक के पत्नी की

मेरे मन के मीत सीमा के
रखवाले।
फागुन में पाती लिखूं कुशल
से है घर वाले।

फागुन है रंग रंगीला तुम,
पर कैसे मैं रंग डालूं।
आंगन सूना घर मेरा सूना,
बच्चों से क्या बोलूं।
मै एक सैनिक की पत्नी,
कैसे अपना मुंह खोलू।
तुम सीमा पर डटे हो प्रितम,
भारत माता की शान बनो।
मेरे मन के मीत सीमा के ,
रखवाले।
फागुन में पाती लिखूं कुशल
से है घर वाले।।

मैं अपने मन को समझा लुगी,
मां बाबूजी को बतला दुगीं।
तुम दिवाली में आओगें,
छोटे बच्चों को समझा दुंगी।
घर की चिंता छोड़ के तुम,
गोली से होली खेलो।
मेरे मन के मीत सीमा के रखवाले।
फागुन में।।।।

पाती से भेजू रंग अबीर,
धीरे से सैनिक पाती खोलो।

पाती में मेरे साजन प्रेम नेह. आशीश भरा है।
पीली सरसों का रंग है इसमे,
होली का उल्लास भरा है।
जिस गांव के हो लाडले,
उस गांव का प्यार भरा है।
तेरी प्यारी पत्नी का सैनिक,
रंग भरा आसूंओं का धार,
भरा है।
मेरे मन के मीत सीमा ,
के रखवाले।
फागुन में लिखूं।।।।।

दुःखी ना हो जिन्दा दिल ,
सैनिक मैं भारत की नारी हूं।
तुम दुश्मन को धूल चटाओ,
मै मैया बाबा को प्यारी हूं।
बस दिवाली की आस है ,
सैनिक सीमा से तुम आ जाना।
आस लगाए बैङ्गी मां बाबा,
उनको गले लगा लेना।
बच्चों संग आ के दिवाली मना जाना।
कहे भानुजा सुनो देश वासी,
इतना समय निकाल लेना।
फौजी भाई के बच्चों संग,
जाके होली मना लेना।
मेरे मन के मीत सीमा के
रखवाले।
फागुन में पाती लिखूं कुशल
से है घर वाले।
जय हिंद जय जवान

बृजकिशोरी त्रिपाङ्गी
गोरखपुर उत्तरप्रदेश।

नोयडा इकाई

चहुं ओर फैली हरियाली

चहुं ओर फैली हरियाली
क्रीड़ा करती कोमल डाली
कौतुहल विस्मय प्रस्फुटित
आँगन महकी है फुलवारी

रंग बिरंगी खिली अधखुली
सुन्दरता की छवि विभावरी
मंद-मंद चले हवा औ झौंके
स्वर लहरी शीतल निर्झरी

ऋतुराज आया सजी टहनी
धरा ने अद्भुत चुनरी पहनी
इङ्गलाती और बलखाती ये
अनुपम उद्धित तरुण मंजरी

भर दो ज्ञान वीणा वादिनी
आशीष दो हे प्रदायिनी
कंङ्ग सबके भरो मधुरता
निर्मल भाव जीवन दायिनी

अवंतिका विशाल'अवि'

नेह लेखनी

माँ शारदे करें हम ,पूजा सदा तुम्हारी
है द्वार पर खडे हम ,विनती सुनो हमारी
आशीष यह मिले बस, पथ सत्य पर चलूँ मैं
नित नेह लेखनी से,मृदु काव्य में ढलूँ मैं।

कैसे न प्रेम होगा, विश्वास यह जगाती
मैं नेह लेखनी से, साहित्य को सजाती
शुचि भाव का सबक मैं, प्रति पल यहाँ पढ़ाती
नफ़रत मिटा तमस का ,दीपक अमिट जलाती

मत द्वेष भाव रखना , कविता हमें बताती
है नेह लेखनी तो , अभिमान को मिटाती
मैं सत्य बोलती हूँ, झूझ्ना नहीं सिखाती
सम्मान में हमेशा,रचना सरस सुनाती

परमार्थ जो जगाये,वह ज्ञान मातु भर दे
उर गेह को सहज कर,पावन उदार कर दे
मां नेह लेखनी से, सबका बनूँ सहारा
बहती रहे निरन्तर,मन में पुनीत धारा

ममता जोशी 'स्नेहा '

उङ्गते ही दौड़ने लग जाना

वह 5:30 के अलार्म पर फुर्ती से उङ्ग जाना
उङ्गते ही दौड़ने लग जाना
किसी की चाय तो किसी का टिफिन बनाना
दौड़ कर बच्चे को बस स्टॉप पर छोड़ कर आना
फिर फटाफट तैयार होकर खुद ऑफिस भाग जाना
बहुत याद आता है।

ऑफिस में वह बोलना खिलखिलाना
बैक टू बैक क्लासेस पढ़ाना
बीच-बीच में बच्चों को धमकाना
और मौका मिलते ही छोटी सी वॉक पर चले जाना
बहुत याद आता है।

सहेलियों के साथ बैङ्गकर लंच खाना
गर्म करने को टिफिन रखना हमेशा भूल जाना,
फिर ङ्गंड भगाने के लिए बढ़िया चाय बनाना
चाय के साथ कभी-कभी समोसे खाना
बहुत याद आता है।

वह तीसरे पहर तक बहुत थक जाना
आखिरी क्लास में बच्चों का मिन्नतें करना
मैडम, प्लीज आज मत पढ़ाना
और फिर मुस्कुरा कर कभी बच्चों को छुट्टी दे देना
पंचिंग मशीन के पास फिर गप्पे लड़ाना
फिर दौड़ कर गाड़ी में बैङ्ग जाना
दौड़ते भागते सब्जी दूध लेकर घर आना
घर पर बच्चों का मुस्कुराना
बहुत याद आता है
इस हौ normal से पहले का नॉर्मल
बहुत याद आता है।

डॉ शिवानी चन्द्रा

कैसा ये अद्भुत रस छाया

कैसा ये अद्भुत रस छाया ।
धरती पै ऋतुराज है अ आया ।

अमवा की डाली पर देखो।
काली कोयल कूक रही है।
कुहू कुहू करके कानों में
मीङ्गी मिश्री घोल रही है।
देखो अमवा भी बौराया
धरती .....

खुशबू की गङ्गरी को बाँधे ।
मौसम महक महक कहता है।
खुशियों को भर लो आँचल में
भँवरे क्यों उदास होता है।
खुशबू से मधुबन मुस्काया
धरती.....

पीली पीली सरसों फूली
महुआ की डाली भी झूली
हरी दूब का बिछा बिछौना
खेतों की पगडंडी झूली।
खुशियों से मौसम मुस्काया
धरती.....

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा

ग़ज़ल

डूबने का लगा मुझे डर है
तेरी आँखों में इक समंदर है

बाद मरने के हाथ ख़ाली हैं
ज़ीस्त का चाहे तू सिकन्दर है

मैं यूँ निश्चिंत होके रहती हूँ
मेरे सर पर ख़ुदा की चादर है

याद रखना न भूल जाना तू
रब की खुश्बू से तू मुअत्तर है

हम मुखौटे लगाए फिरते नहीं
जो है बाहर हमारे भीतर है

मेरी तुझ तक सदा नहीं जाती
हो गया तेरा दिल भी पत्थर है

अब बचाऊँ वज़ूद 'अनु' कैसे
दिख रहा हर तरफ़ ही अजगर है

अनीता सिंह 'अनु'

होता क्यों है बहुधा ऐसा

होता क्यों है बहुधा ऐसा, बेटी चुप चुप रोती है ?
भाई नज़रें फेर रहा क्यों, सोच दुखी वह होती है?
पिता के अरमानों का सूर्य, दिन में क्यों ढल जाता है?
एक अंधेरे कोने में फिर ,बिस्तर क्यों डल जाता है?

शशि बाला किरन

कानपुर इकाई

एक छन्द.....

पुहुपन संग झूम रहे भँवरा,
कलियाँ खिल के मुसकाय रहीं।
धरती ने कियो है सिंगार अमित,
चुनरी पियरी लहराय रही।
पिय आये न फ़ागुन आइ गयो,
तन काम अगिन सुलगाय रही।
रंग खेलूँ,अबीर लगाऊँ किसे,
यह सोच जिया को सताय रही।

डॉ सुषमा त्रिपाठी

नव संवत

आशाओं की पिटारी आया नव संवत
हम मिलकर करते हैं इसका अभिनंदन।

हर दिशा में बिखरी नई चमक-दमक,
खुशियों से झूम उड़े धरती और गगन।

बीते समय की यादों को छोड़ो,
आने वाले कल में नए फूल जोड़ो।
नव ऊर्जा से भर लो अपने मन को,
संभालो संकल्प, बढ़ाओ जीवन को।

हर कली मुस्काएगी अब बगिया में,
नव संवत की लहर छाएगी हर दिशा में।
रंग बिखेरेगा यह उल्लास का कारवां,
सपनों में सज जाएगा नया आसमां।

नया सवेरा, नई उमंग की बातें,
अब न कोई रुकावट, न कोई विराम की रातें।
चलो मिलकर प्रेम और सद्भाव बोएं,
सफलता की राहों में नव दीप संजोएं।

आशाओं की पिटारी आया नव संवत,
हम मिलकर करते हैं इसका अभिनंदन।।

सुनीता गुप्ता

रंग बिरंगी होली है,

रंगो की यह टोली है, रंग बिरंगी होली है ,
सारे भेदभाव अब मन के मिटाइये।
देवर और भाभी की, जीजा और साली की ,
झिझौली का त्योहार है ,रंग तो जमाइये।
अबीर और गुलाल उड़ै,प्रेमियों का प्यार बढ़ै
पावन त्यौहार है ,यूँ ना आजमाइये।
बाबा भी देवर लागे, साली घरवाली साजै
मनोहर का त्यौहार है ,यूँ ना गवाईये।

डां अर्चना सिंह चौहान

हर हर महादेव

ओम नमः शिवाय , ओम नमः शिवाय
बम बम भोले नमः शिवाय

काशी कैलाश के वासी , पार्वती संगे
हर हर महादेव शंभू , काशी विश्वनाथ गंगे
माथे पे अर्ध चंद्र सोहे , कानन कुंडल डोले
पहने हैं मृग छाला , अंग भवूत लिपटाए
हर हर .....
काशी विश्वनाथ .....

सब देवों में शोभा है न्यारी , चाल चलें मतवारी

रूप इनका अनोखा देखो , अमरनाथ भंडारी
इनकी भक्ति में हैं सब डूबे , सबके तारणहारी
मेरे भोले बाबा निराले , सारे लोक में महिमा गूंजी
हर हर .....
काशी विश्वनाथ.....

गले में इनके सर्पों की माला , करते बैल सवारी
भांग , धतूरा , बेल पत्र और फूलों से करते श्रंगारी
कार्तिकेय, गणपति जी राजदुलारे और अशोक सुंदरी बेटी प्यारी
मेरे प्यारे भोले भंडारी नीलकंङ्ग हैं धारी ,
उन्होंने दुनियां है तारी
हर हर .....
काशी विश्वनाथ.....

सदा सहाय सब पे रहते , झट से सबके कष्ट हरते
सत्यं शिवम सुंदरम , भावों को समझते
कहे हंसा शीश झुकाऊं , शिवलिंग पे जल चढ़ाऊं
करें गुलाल और मोली से अर्चना बाबा का आशीष पाऊं
हर हर .....
काशी विश्वनाथ.....

डा.योगिता सिंह 'हंसा'

मेरी उदास लेखनी

मेरी उदास लेखनी'
ज्यों लिखने को उङ्गाई लेखनी
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी क्या लिख रही हो इस बार,
क्या नया है जैसी गुजरी जिंदगी,
वैसे ही अब भी रही हो गुजार ।

सोचने को सच में हो गई मजबूर,
नहीं याद मुझे कब दिल से हंसी थी,
और कब मेरा गुलशन हुआ था गुलजार,
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी क्या लिख रही हो इस बार,
सुना था लेते हैं परीक्षा भगवान,
अच्छे इंसानों की कई बार,
कर दो अब तो पास भगवान
दर्द और परेशानियों से लो हमको उबार,
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी क्या लिख रही हो इस बार,
राहें जिंदगी की बहुत कङ्गिन,
थक रही हूं धीरे-धीरे अब
चाहती हूं एकांत में रहना,
जबकि रिश्तों की है भरमार ।
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी, क्या लिख रही हो इस बार,
आईना मेरा झूङ्ग बोलता हर बार,
चेहरे पर मेरे दिखती खुशी हरदम

और वो नहीं दिखा पाता,
मेरे दिल का गुबार।
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी क्या लिख रही इस बार,
करती हूं खुश रहने का वादा अपने आप से कई कई बार,
है उम्मीद तुम ही से भगवान,
अब लगा दो मेरी नैया संकट से पार।
पूछ बैङ्गी मेरी लेखनी क्या लिख रही हो इस बार।

पुष्पा सिंह

कितना अजीब सोचते हैं

कितना अजीब सोचते हैं ये दुनिया वाले,
परिंदों को बेघर कर आशियाना खोजते हैं।

बसा कर आसमाँ तक मंजिलों का जाल,
अब वही तारों भरा आसमान खोजते हैं।

उजाड़ कर अपने ही खेत खलिहान,
शहर की धूप में घनी छाँव खोजते हैं।

अपने खेतों की माटी में विष बो कर,
अब शहरों की छतों पर खेत खोजते हैं।

कैसे नादान बनते है सयाने लोग,
गाँव छोड़कर शहरों में गाँव खोजते हैं।

रेखा श्रीवास्तव

कर्मनिष्ठ

इन्हें पाँव की धूल न समझें ,ये माथे का चंदन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं।।

सर्दी गर्मी बारिश भूलें, कार्य भार देखें पहले।
नगर स्वच्छ रखते कर्मी, नहीं व्याधि से घर दहले।।
पूर्ण समर्पण इनका देखा, भले झेलते क्रंदन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं।।

श्रमिक घिरे मिट्टी गारा में, रोजी रोटी मजबूरी।
तपे धूप में शीत झेलते,करते नित वह मजदूरी।।
उदर पकड़ कर अक्सर सोते, भरा अभावों जीवन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं।।

कृषक रात दिन श्रम करते हैं, यह कृषि कृत अति उपकारी।
मार प्रकृति की जब तब झेलें, अन्न प्रदाता हितकारी।।
अथक परिश्रम कर जग सेवा, गतिमय तब उर स्पंदन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं।।

सहें प्रसव की असह्य पीड़ा, सृष्टि सहायक नारी हैं।
मेरुदंड बनतीं जीवन की, खेल रही सब पारी हैं।
माँ पत्नी भगिनी सब रिश्ते, निभा रहीं कर छंदन हैं।
कर्मनिष्ठ यह परिचर प्राणी, करें हृदय से वंदन हैं

सीमा वर्णिका

चिन्ता का इन्द्रधनुष

चिन्ता हो मेरी चारु प्रिया,
चिंता ही मेरी चहेती है।
मन मेरा मथती रहती है,
सब व्यथा खोल रख देती है।।

जब चित्त शिथिल हो जाता है,
चिन्ता ही इसे जगाती है।
चंचला चकित कौंधा करती,
तन्द्रा तम मार भगाती है।।

गल बाँह डाल चिपकी रहती,
चेतन से प्यार बढ़ाती है।
चिंतन के कितने चुने फूल,
माथे पर मेरे चढ़ाती है।।

भरती है मेरा हिया सिया,
सपनों को मेरे सेती है।
शर्माती नहीं तनिक भी यह,
नस-नस मेरी सहलाती है।।

बातें प्रिय सतत किया करती,
कुंतल बिखेर फहराती है।
घूंघट तो इसे नही जंचता,
मुख चंचल चाँद दिखाती है।।

पीड़ातिरेक जब होता है,
चल चितवन तीर चलाती है।
कितनी सुन्दर है शान्त सुघर,
वनिता मुझको सहलाती है।।

मेरा झट हृदय चीर देती,
ये पल-पल पीर बढ़ाती है।
रग-रग में रम, बिजुरी सी हँस,
ये जगह-जगह जम जाती है।।

अनवरत घूमती अंतर मे,
पर चाल नहीं थम पाती है।
संसार सकल सो जाता है,

यह मुझको जगा सताती है।।

व्यंजन मधु विविध खिलाती यह,
पर पूर्व स्वयं चख लेती है।
कुछ घात और प्रतिघात हुआ,
यह मुझे बताया करती है।।

गत दुर्दिन में जो कभी हुआ,
यह मुझे जताया करती है।
घावों के गहरे गर्त सभी,
भर नेह निभाया करती है।।
चिर संगिनि मेरी छाया सी,
नित सेज सजाया करती है।
जो दृश्य न दीखे आंखो को,
यह उसे तुरत लख लेती है ।।

जड़ जंगम के जग की व्याख्या,
यह मुझे बताती रहती है।
कोयल बनकर यह डाल-डाल,
कू-कू-कू करती गाती है।।

जब 'प्रखर' हताश-निराश हुआ,
मुँह बना-बना मुसकाती है।
ऊषा के अगणित इन्द्र धनुष,
अंतस मे यह चमकाती है।।

पूनम पांडेय

फिर बाद में न पछताना तुम

कभी किसी का दिल ना दुखाएँ,
ऐसा कोई काम न करना तुम ।

मानव हो मानव बनकर सदा,
सब पर प्यार लुटाते रहना तुम।

दीन -दुखियों की सेवा करके,
मानवता का मान बढ़ाना तुम।

जीवन में कितनी विपदा आए,
सच्चाई के पथ में चलना तुम।

जीवन में खुद को बुलंद करना,
की एक मिसाल बनना तुम ।

रोते मानव के आँसू पोंछ देना,
फिर बाद में ना पछताना तुम ।

भूखे को भोजन सदा कराना,
उसको मना मत करना तुम ।

पता नहीं किस रूप में प्रभु हों,
फिर बाद में न पछताना तुम।।

सुषमा सिंह 'उर्मि'

शिलांग इकाई

हाइकु

होली का रंग
छाया इन्द्रधनुष
मस्त टोलियाँ

धरती सजी
उड़े गुलाल, टेसू
फागुन आया

होली की टोली
कर रही झिंझोली
हँसे केसर

फाइकु
रंग बरसे चारो ओर
गुलाल लाल-पीले
तुम्हारे लिये

मिल रहे सब गले
कर रही प्रतीक्षा
तुम्हारे लिये

लिये फूलों की थाल
बनाये विविध व्यंजन
तुम्हारे लिये

अनीता पंडा 'अन्वी'

रंग

रंगों का त्यौहार है, खेलो अबीर गुलाल,
हरा, नारंगी, बैंगनी, नीला, पीला लाल।
रंगों की दुनिया कितनी है अनमोल,
बिना रंग जीवन हो जाये बेमोल।।
प्रकृति ने अनूझे रंग हैं बनाए,
सतरंगी इंद्रधनुष सबके मन को भाए।।

सतरंगी रंगों से भरी ये कायनात,
हर रंग की अपनी खूबी, अपनी महिमा गाए।।
मयूर के पंखों को इतना सुंदर बनाया,
इसीलिए तो कान्हा को मोर पंख है भाया।।
रंग गुलाबी मोहब्बत का, कराता है आभास,
नीले रंग से सराबोर, सागर और आकाश।।
मातृभूमि की मिट्टी का, रंग भूरा है न्यारा,
सोंधी इसकी खुशबू, लगे यह सबसे प्यारा।।
सूर्य का रंग पीला, ऊर्जा और आशा जगाए,
अंधकार और शोक का, काला प्रतीक बन जाए।।
प्रकृति से हरा, शौर्य से केसरिया,
शांति को सफेद रंग संजोए ,
देशप्रेम और अभिमान से तिरंगा मेरा लहराए।।
इन रंगों से अलग, बहुतेरे हैं कई रंग,
बेरंग होकर भी जिंदगी में भरते जो उमंग।।
रंग जो भावनाओं को दर्शाते,
जीवन को बहुरंगी बनाते।।
रंग मां के दुलार, पिता के प्यार का,
भाई बहनों के स्नेह का,
दिखते नहीं पर जीवन में जरूरी बहुत ये रंग हैं,
इन रंगों के बिना तो जिंदगी सच में बेरंग है।।
दोस्तों की दोस्ती का रंग है अनमोल,
बच्चों की मुस्कान का रंग,
दे जीवन में खुशियां घोल।।
देश प्रेम का रंग, तन में जोश जगाए,
रिश्तों में लगाव का रंग, जीवन सुखद बनाए।।
बिना रंगों के जिंदगी हो जाए बेजान,
प्रेम, प्यार और स्नेह के रंग, सबसे अधिक महान।।
छोड़ ईर्ष्या द्वेष, धर्म जात,
रंग भावनाओं के समेट आगे बढ़ो,
होली के रंगों के साथ,
रंग खुशियों के, सबके जीवन में भरो।।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

ब्रज की होली

'आयो फागुन रंग रंगीला,बरसे रंग गुलाल
बाल ग्वाल संग खेले होली मेरे मदन गोपाल।

आया फागुन तो आ गई होली रे
रंगों से भर गई सबकी झोली रे
मतवालों की निकली टोली रे
अरे रे रे.....भीग गई बालाओं की चोली रे।

ब्रज में गोपाल आवे, ढोल और मंजीरे बाजे

नाच नाच वह धूम मचावे,बीच डगर गुलाल उड़ावें
ग्वालों के संग खेले होली रे। आया फागुन....

रंगों की बौछार छाई, पिचकारी की फुहार आई,
अंगिया भीगी, चुनरी भीगी ,भीग गई है चोली
मस्ती में खेल रही ग्वाल बालों की टोली रे। आया...

गोपियों को खूब सतावे, बांह मरोड़े,मटकी फोड़ें
पिचकारी मारे, रंग बरसावे,बंसी की फिर तान सुनावें
सखियों के मुख पर मड दियो गुलाली रे।
आया फागुन तो आ गई होली रे।

सुनीता भट्ट गोजा

होली

फागुन आया, फागुन आया
देखो-देखो चारों ओर
नयेपन से सजी प्रकृति,
धरा लगे दुल्हन जैसी,
रंगों से भरा त्योहार लाया,
गुलाल, अबीर से रंगे चेहरे
क्या है कौन, कौन जाने
उसमें कालू-धोलू
रीना-मीना रंगे सब एक जैसे।
अपने चेहरे को रंगों के पीछे
छिपाकर चले ऐसे,
जैसे कोई अपनों में से।
मिलकर घुल-मिल जाएं,
ऐसे, जैसे कान्हा मिल जाए शिवा से
चल रहे हैं साथ सबके
लगे धरा पर उतर आया
आसमान, इंद्रधनुष को साथ लिए।

मल्लिका दे विष्णु

आओ खेले होली

गुलाल उड़ाए,
प्रीत की खुशबू फैलाये,
रंगों की बौछार लाये,
जीवन रंगों से भर जाए,
भूलें शिकवे मिटाये
मिलकर प्रेम के गीत गाये ,
हाथो में हाथ,
गालो पे गुलाल,
होंङ्गों पे हंसी,
एहसास भाईचारे की लगे मीङ्गी त

बच्चे, बूढ़े, नर और नारी,

सब मिल खेलें होली
गूंजे हैं बोल हर गली,
रंग दो जीवन,आओ खेले होली त

शबरी सरकार धर

हाइकु

बरसे रंग
आओ मनाए होली
मस्तो की टोली

रंग बिखरे
धरा दिखे रंगीन
होली है होली

ऐसा है पर्व
भूल जाते है ग़म
होली के दिन

होली में आज
यूँ रंग गई धरा
झूमे हम भी

पर्व है होली
महिना है फागुन
रंग बरसे

अनुपमा

ब्रजभूमि

फगुआ रे फगुआ
बना है कृष्ण अगुवा।
चली रे चली रंगों की टोली
गोपिनीयों संग खेलने होली।
देखीं, भागीं गोपिनीयां हिरनी सी चाल
आगे आगे गोपिनीयां पीछे ग्वाल वाल।
उड़ाए गुलाल
हरे, पीले लाल
मारी पिचकारियां
भीगी चुनरिया
लाज से हो गयीं गोरिया पानी पानी
बहुत हुआ अब न छोड़ेंगे राधा ने ठानी।
सखि संग कुछ बोली
कृष्ण के पास गयी बनके भोली
बोली राधा,बहुत हुआ अब तो छोड़ दो
सखियां भी आयीं बोली, हाँ अब तो छोड़ दो
घेर लिया कृष्ण को सखियों ने

छीन के पिचकारी मारी राधा ने
देख के लीला धन्य हुई ब्रजबासी
नमो-नमो ब्रजभूमि, नमो प्रेम अविनाशी।

गीता लिम्बू

दिल्ली इकाई

कविता है जनाब

कविता – कविता है जनाब, हिंदू न मुसलमां होती है
सुकून-ए-तारी इंसाँ की, राहत का पयाम होती है

रुह से निकली है हुजूर, रूह तक ही जायेगी
पंडित-काज़ी की इसे परवाह कहाँ होती है

हँस के मिलती है कभी, रुङ्गो तो मनाती है
महबूब से बिछड़े तो छुप-छुप के रुलाती है

माँ के लिये बेटा है, बेटी के लिये बाप
भाई की राखी बन, जंग-ए-मैदाँ तक जाती है

हिंदू के लिये गीता, कुरान है मुस्लिम की
गुरु-ग्रंथ है सिखों की, बाइबिल ईसा की गाती है

फूलों की हम-सुखन बन काँटों में झूमती है
चाँद सी माशूक़ के ख्वाबों में सँवरती है

बुलबुल के गीतों में, कोयल सी कूकती है
भँवरों का ये गुनगुन बन शाखों को चूमती है

भूखे के लिये रोटी है, प्यासे को है पानी
दूध बन के माँ की छाती से उतरती है

अक्षर है - ब्रह्म है ये, अल्लाह-ए-क़रम है
नवरंग सी सप्तक के सुर-ताल में ढलती है

शिव सा ये गरल पी के समाधि में अचल है
कान्हा की बाँसुरी बन राधा को बुलाती है

मेरे वतन के लाड़लों, ये गीत है तेरे लिये
सर पे जिन्हें क़फन भी सेहरा सा सोहती है

डॉ. रश्मि झा

बेवफा दुनिया

बेवफा दुनिया में जी लूंगी हमारा क्या है।
ज़हर हंस हंस के भी पी लूंगी हमारा क्या है।।

तूने हर मोड़ पे हर बार साथ छोड़ा है।
ज़िन्दगी तन्हा ही ही जी लूंगी हमारा क्या है।।

सांस जब तक है बदन में न करुंगी शिकवा।
अपने होङ्गों को भी सी लूंगी हमारा क्या है।।

सब्र का घूंट ही पी पी कर गुजारी है हयात।
और अश्कों को भी पी लूंगी हमारा क्या है।।

तंज़ के तीर से छलनी है जिगर मेरा अज़ीज़।
ज़ख्म दिल के भी मैं सी लूंगी हमारा क्या है।।

अफ़रोज़ अज़ीज़

पटना इकाई

जिंदगी जीने की कला है

जिंदगी जीने की कला है
सच, जिंदगी जीने की बेशक कला है
सादगी और अनुशासन ही जीने की कला है
जीवन बड़ा अमूल्य है
इसका सही प्रबंधन
हमारे जीवन को सुखमय बना सकता है
जीवन में संसार का अनुपम सौंदर्य है भरा हुआ
इसका आनंद तभी ले सकते हैं जब
जीवन जीने की कला को अच्छी तरह समझ लें
अध्यात्म हमें जीवन जीने की कला सिखाता है
यह दिव्य विद्या प्राणी को हर दुःख,
कष्ट और चिंता से निजात दिलाकर
आनंद से सराबोर करता है
अतीत की चिंता को हटा दें
रिश्तों को अहमियत दें
दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें
सकारात्मक सोच अपनाना चाहिए,
खुश रहने के लिए जरूरी है कि हम वर्तमान में जीना सीखें
और हर पल को खुशियों के साथ बिताएं
जिंदगी में खुश रहना कोई जादू नहीं है
यह एक सतत प्रयास है
हमें अपने जीवन योग को भी
नियमित रूप से शामिल कर लेना चाहिए
इसे हम एक यात्रा भी कह सकते हैं
इसे हम अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनाएंगे,
उतनी ही खुशी प्राप्त होगी
इसलिए हमेशा खुश रहना सीखें
अपने जीवन को संतुलित और स्वस्थ बनाएं

डॉ मीना कुमारी परिहार

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।